पुस्तक भारती जर्नल

Golden Heritage

Oct-Dec 2019

पुस्तक भारती रिसर्च जर्नल

NO 4 : OCT-DEC.

PRAVASI ISSUE

Pustak Bharati Research Journal

Toronto, Canada

ISSN : 2562-6086

pustak.bharati.canada@gmail.com

www.pustak-bharati-canada.com

हिंदी, संस्कृत, कला, संगीत और संस्कृति प्रचार-प्रसारक
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक द्विभाषीय शोधपरक पत्रिका

A Research Oriented

Quarterly International Bilingual e-Journal

for the propagation of Hindi, Sanskrit, Arts, Music and Culture.

मुख्य संपादक : डॉ. रत्नाकर नराले Chief Editor (CEO) : Dr. Prof. Ratnakar Narale

सह संपादक : डॉ. राकेश कुमार दूबे Sub Editor (SEO) : Dr. Rakesh Kumar Dubey

JOURNAL MAIN MENU

Pustak Bharati पुस्तक भारती संस्था	Our Publications हमारे प्रकाशन	E-Research Journal ई-रिसर्च जर्नल	E-Bharat-Saurabh MAGAZINE ई-भारत-सौरभ	Board of Directors कार्यकारी मंडल	Contact us संपर्क
Registration पंजीकरण	Subscription/ Membership सदस्यता/योगदान	PDF - Research Journal	PDF-Magazine PDF भारत-सौरभ	Announcements सूचना	Our Success Story हमारी यश गाथा
Pustak Bharati SITE-MAP शीघ्र अवलोकन	Literary News साहित्यिक वार्तावली	Advertisement विज्ञापन	Helpful links उपयुक्त कड़ियाँ	They said it लोकमत	Old Articles पुराने लेख

मुख्य संपादक : डॉ. रत्नाकर नराले Chief Editor (CEO) : Dr. Prof. Ratnakar Narale

सह संपादक : डॉ. राकेश कुमार दूबे Sub Editor (SEO) : Dr. Rakesh Kumar Dubey

पुस्तक भारती रिसर्च जर्नल

प्रवासी विशेषांक

Pustak Bharati Research Journal

आलेख / Research Articles

पुस्तक भारती रिसर्च जर्नल

गणेश वंदना

Ratnakar Narale, Toronto, Canada

1. Dr. Madhu Sandhu, Amritsar, Punjab
   प्रवासी भारतवंशियों का भारत की संस्कृति के प्रचार-प्रसार में योगदान

2. Rajpalsingh Allgoo, Mauritius
   Sacrifice and Hardship of Indenrure Laboureres in Mauritius

3. Dr. Rakesh Kumar Dubay, Varanasi, India
   गिरमिटिया प्रथा : भारतीय सभ्यता पर एक कलंक

4. Dr. Vimlesh Kanti Varma, Delhi, India
   प्रवासी भारतीय समाज, भाषा, साहित्य और संस्कृति

5. Dr Kiran Grover, Abohar, Punjab
   प्रवासी जीवन सम्बन्धी समस्याओं के अध्ययन की वर्तमान समय में प्रासंगिकता

6. Prof. Krishna Kumar Goswami, Delhi, India
   प्रवासी हिन्दी साहित्य: अस्मिता की चुनौतियाँ

7. Dipti Agrawal, Haryana, India
   दक्षिण अफ्रीका की प्रतिबंधित हिंदी कृति : 'दरबन का बलवा'

8. Sunita Narale, Toronto, Canada
   भारतीय संस्कृति की विश्वप्रसारक संस्था : कनाडा की पुस्तक भारती

भारत सौरभ

Bharat Saurabh

भारत सौरभ

सरस्वती वंदना

Ratnakar Narale, Canada

1. Dr. Shyama Singh, Prayagraj, India
   हिन्दी साहित्य की विविध विधाएँ और प्रवासी लेखक
2. Dheera Varma, Delhi, India
   प्रवासी पीड़ा और अंतर्द्वंद्व –लोकगीतों का सन्दर्भ
3. Dr. Deepak Pandey, India
   भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों का संवाहक देश : त्रिनिडाड एवं टोबैगो
4. Dr. Mridul Kirti, USA
   प्रवासी भारतवंशियों का भारतीय संस्कृति के प्रचार प्रसार में योगदान
5. Dr. Vijaya Sati, Delhi
   बदलते समाज की तस्वीर प्रस्तुत करती कहानी संग्रह 'हाईवे ई 47'
6. Sunita Pahuja, India
   त्रिनिदाद समाज पर महात्मा गाँधी का प्रभाव
7. Shashi Padha, North Carolina, USA
   सांस्कृतिक धरोहर के संवाहक –प्रवासी भारतीय
8. Dr. Sandhya Singh, Singapore
   सिंगापुर और प्रवासी भारतीय

The Board of Directors
कार्यकारी मंडल

Pustak Bharati Research Journal

रिसर्च जर्नल

Board Members

मुख्य संपादक : डॉ. रत्नाकर नराले Chief Editor (CEO) : Dr. Prof. Ratnakar Narale

सह संपादक : डॉ. राकेश कुमार दूबे Sub Editor (SEO) : Dr. Rakesh Kumar Dubey

1. जर्नल संपादक मण्डल / The Editorial Board

1. प्रो. मोहन काँत गौतम, नीदरलैंड

Prof. Mohan Kant Gautam,International ScientificCommission on Museums and Cultural Heritage (COMACH), affiliated to UNESCO, Netherlands

2. श्रीमती फरीदा शेख, टोरंटो, कनाडा

Ms. FaridaShaikh, MA, MSLS, Library Manager, Vellor Village Public Library, Woodbridge, Ontario, Canada

3. प्रो. सोमा बंद्योपाध्याय, कुलपति, वेस्ट बंगाल यूनिवर्सिटी ऑफ टीचर्स ट्रेनिंग, एजूकेशन ऐंड ऐडमिनिस्ट्रेशन, भारत.

Dr. Prof. Soma Bandopadhyay, Vice Chancellor, West Bengal University of Teachers Training, India.

4. प्रो. अरुणा सिन्हा, प्रोफेसर इमेरिटस, इतिहास विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, भारत

Prof. Aruna Sinha, Prof. Emeritus, Dept. of History, BHU, Varanasi, India.

5. डॉ. तंकमणि अम्मा, पूर्व डीन, प्राच्य अध्ययन संकाय, केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनन्तपुरम्, केरल , भारत

Dr. Thankomani Amma, Dean University of Thiruvantpuram, Kerala, India.

6. प्रो. जियांग जिंगकुई, डाइरेक्टर, सेंटर फॉर साउथ एशियन स्टडीज, पेकिंग यूनिवर्सिटी, चाइना

Prof. Dr. Jiang Jingkui, Dept. of South Asian Studies, Peking University, China

7. प्रो. ब्रिजमोहन महाराज, स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर, अर्थ ऐंड इनवारोंमेंटल साइंस, हावर्ड कालेज कैंपस, डरबन, साउथ अफ्रीका

Prof. Brij Maharaj,School of Agriculture, Earth and Environmental Science, Howard College, Durban University, South Africa

8. प्रो. उपुल रंजीथ हेवावितानागामगे, चेयर, सीनियर प्रोफेसर आफ हिंदी स्टडीज, यूनिवर्सिटी ऑफ केलानिया, श्रीलंका

Prof. Upul Ranjith Hewawitanagamage, Prof. in Hindi Studies, University of Kelaniya, Sri Lanka

2. जर्नल परामर्ष मण्डल / The Advisory Board

1 डॉ. मनोज कुमार पटैरिया, सी.एस.आई.आर. नई दिल्ली, भारत

Dr. Manoj Kumar Patairiya,Director CSIR-National Institute of Science Communication&InformationRes. (CSIR-NISCAIR), New Delhi.

2 डॉ. एन. के. चतुर्वेदी, प्रोफेसर (से. नि.) जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान, भारत

Dr. N. K. Chaturvedi, (Retd.) Jaynarayan Vyas University, Jodhpur, Rajasthan, India

3 प्रो. पुष्पिता अवस्थी, डाइरेक्टर, हिंदी यूनिवर्स फाउंडेशन, नीदरलैंड

Dr. Pushpita Awashthi, Director, Hindi University Foundation, Netherlands.

4 प्रो. हेमराज सुंदर, प्रोफेसर (से. नि.) महात्मा गांधी संस्थान, मारीशस

Prof. Hemraj Sundar, (Retd.) Mahatma Gandhi Institute, Mauritius.

5 डॉ. सिराजुद्दिन नर्मतोव, उजबेकिस्तान

Dr. Sirojiddin Nurmatov,Assoc. Prof. South Asian Languages Dept. Tashkent State Institute ofOriental Studies,Uzbekistan.

6 प्रो. रामनिरंजन परिमलेंदु, गया बिहार, भारत

Prof. Ram Niranjam Parimalendu, University of Gaya, Bihar, India

7 डॉ. गेनादी श्लोम्पेर, इजरायल

Dr. Genady Shlomper, Tel-Aviv University, Israel.

8 डॉ. जवाहर करनावट, महाप्रबंधक, बैंक ऑफ बडौदा, कॉरपोरेट कार्यालय, मुम्बई, भारत

Dr. Jawahr Karnavat, Mumbai, India.

3. जर्नल संरक्षक मण्डल / The Board of Patrons

1 प्रो. विनोद कुमार मिश्र, महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय, मारीशस

Prof. Vinod Kumar Mishra, General Secretary, World Hindi Secretariat, Mauritius.

2 प्रो. जून पॉलर्ड, कनाडा, रायर्सन युनिवर्सिटी, टोरंटो, कनाडा

Prof. June Pollard, Ryerson University, Toronto, Canada.

3 डॉ. जॉन मक्लाउड, प्रो. हिस्ट्री, लुइसविल युनिवर्सिटी, केंटकी, अमेरिका

Dr. John McLeod, Prof. History, University of Louisville, Kentuckey, USA.

भारत-सौरभ

Board Members

मुख्य संपादक : डॉ. रत्नाकर नराले Chief Editor (CEO) : Dr. Prof. Ratnakar Narale

सह संपादक : डॉ. राकेश कुमार दूबे Sub Editor (SEO) : Dr. Rakesh Kumar Dubey

1. भारत-सौरभ संपादक मण्डल / The Editorial Board

1 प्रो. करुणाशंकर उपाध्याय, विभागाध्यक्ष, हिंदी, यूनिवर्सिटी ऑफ मुंबई भारत

Prof. Karunashankar Upadhyay, HOD Hindi, University of Mumbai, India

2 प्रो. दक्ष्य मिस्त्री, विभागाध्यक्ष, महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ यूनिवर्सिटी, बड़ौदा, गुजरात

Prof. Dakshya Mistri, HOD, Maharaja Sayajirao Gayakwad University, Baroda, Gujrat, India.

3 डॉ. सुशीला देवी गुप्ता, डी. लिट. कनाडा.

Dr. Sushila Devi Gupta, D.Lit. Hindi. Canada.

4 प्रो. शंभुनाथ तिवारी, प्रोफेसर, अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी, उत्तर प्रदेश भारत

Prof. Shambhu Nath Tiwari, Aligadh Muslim University, Aligadh, India.

5 प्रो. डॉ. शांति नायर, विभागाध्यक्ष, हिंदी, शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कलादी, केरल, भारत

Prof. Dr. Shanti Nair, HOD Hindi, Shankaracharya Sanskrit University, Kaladi, Kerla, India.

6 प्रो. नीलू गुप्ता, हिंदी प्रोफेसर. डिएंजा कालेज. कैलिफोर्निया, अमेरिका

Prof. Nilu Gupta, Prof. Hindi, D. Enza College, California, USA.

2. भारत-सौरभ परामर्ष मण्डल / The Advisory Board

1 डॉ. मृदुल कीर्ति, स्वतंत्र लेखन, अमेरिका

Dr. Mridul Kirti, Freelance Writer, USA

2 डॉ. शैलजा सक्सेना, कनाडा

Dr. Shailja Saksena, Mississauga, Canada.

3 प्रो. के. एन. उपाध्याय, प्रोफेसर, जयनारायण व्यास युनिवर्सिटी, जोधपुर, राजस्थान, भारत

Prof. K. N. Upadhyay, Jaynarayan Vyas University, Jodhpur, Rajasthan, India

4 डॉ. राम प्रसाद भट्ट, जर्मनी

Dr. Ram Prakash Bhatt, Germany.

5 डॉ. ब्रिजेश सिंह, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

Dr. Brijesh Singh, Bilaspur, Chhatisgadh, India.

6 प्रो. शिवकुमार सिंह, पुर्तगाल

Prof. Shiv kumar Sing, Portugal.

7 डॉ. संध्या सिंह, सेंटर फॉर लैंग्वेज स्टडीज़, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर

Dr. Sandhya Singh, Centre for Language Studies, National University of Singapore.

3. भारत-सौरभ संरक्षक मण्डल / The Board of Patrons

1 डॉ. मधुसूदन झवेरी, अमेरीका

Dr. Madhusudan Jhaveri, Prof. (Retd) University of Massachusetts, USA.

2. डॉ. कमल किशोर गोयनका, उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, भारत

Dr. Kamal Kishor Goyanka, Vice-Chairman, Kendriya Hindi Sansthan, Agra, India

3. डॉ. यशवंत पाठक, संस्थापक, हिंदू युनीवर्सिटी ऑफ अमेरीका, फ्लोरीडा, अमेरिका

Dr. Yashwant Pathak, Founding Member, Hindu University of America, Florida, USA

4. संस्कृत-विधायक-मण्डलम् / The Board for Sanskrit Studies

1. डॉ. श्रीनिवास वाराखेडी, कुलपति, कालीदास संस्कृत विश्वविद्यालय, नागपुर, भारत.

Dr. Shrinivas Varakhedi, Vice-Chancellor, Kalidas Sanskrit University, Nagpur, India.

2 डॉ. पी.के. धर्मराजन, कुलपति, शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कलादी, केरल, भारत

Dr. P. K. Dharmarajan, Vice-Chancellor, Shankaracharya Sanskrit University, Kaladi, Kerla

3 डॉ. सोमेश्वर दत्त, निदेशक, हरियाणा संस्कृत अकादमी, पंचकूला, भारत

Dr. Someshwar Dutt, Directore, Haryana Sanskrit Academy, Panchakula, India.

4 पं. डॉ. ऋषि राम शर्मा, ब्राम्पटन, कनाडा

Dr. Pt. Rishi Ram Sharma, Acharya, Radha Mohan Sansthan, Brampton, Canada.

सहयोगी मण्डल / The Board of Associates

1 रमेश चंद, फीजी

Publisher Ramesh Chand, Fiji

2 रजनी सिंह, डिबाई, बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश, भारत

Publisher Rajni Singh, Bulandshahar, India.

3 डॉ. विदुषी शर्मा, जनरल सेक्रेटरी, इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स ऑर्गेनाईजेशन, दिल्ली स्टेट, भारत

Dr. Vidushi Sharma, GS, International Human Rights Organization, New Delhi, India.

4 श्री यंतुदेव बुधु, प्रधान, हिंदी प्रचारिणी सभा, मारीशस

Shri Yantudeo Budhu, Chief, Hindi Pracharini Sabha, Mauritius.

5 सुनीता नरायन, अध्यक्ष, कोमुनिटी लेंग्वेजस असोसिएशन ओफ् न्युज़ीलेंड

Sunita Narayan, Pres. Community Language Association, New Zealand.

6 डॉ. सतीश शास्त्री, प्रवक्ता हिन्दी,, राजकीय इंटर कालेज भोगपुर , हरिद्वार, उत्तराखण्ड भारत

Dr. Satish Shastri, Prof. Hindi. Rajkiya Inter College Bhogpur, Haridwar, India.

7 रेखा राजवंशी, आस्ट्रेलिया

Rekha Rajvamshi, Australia.

8. राम कुमार पण्डित क्षत्री, नेपाल

Ram Kumar Pandit Kshatri, Editor, Sulekh Sahityik Magzine, Nepal.

NOTE

Those contributors

who want a PDF copy of their Article,

please write to

pustak.bharati.canada@gmail.com

For all other valued readers

Special Book Issue will be available on

www.amazon.com

संपादकीय

पुस्तक भारती जर्नल का बहुप्रतीक्षित 'प्रवासी विशेषांक' आप सभीं के समक्ष प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता हो रही है। वर्ष 2019 में महात्मा गांधी की 150वीं जयंती न केवल भारत अपितु विश्व के कई देशों में हर्षोल्लास के साथ मनाई गयी और इसी बात को ध्यान में रखकर इस बात पर विचार किया गया कि 2020-21 में 'गिरमिटिया प्रथा' की पूर्ण समाप्ति के 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं इसलिए इस पत्रिका के द्वितीय अंक के आने के पूर्व ही 22 जून, 2019 को ही इस बात का संकल्प ले लिया गया था कि पत्रिका का चतुर्थ अंक प्रवासी भारतीयों पर केंद्रित होगा, जो कि अब आप सभीं के समक्ष प्रस्तुत है।

जब 1833 में दुनियां से गुलामी की प्रथा उठ गयी तो अंग्रेजों ने स्वजातियों के लाभ के लिए भारत में परिवर्तित रुप में उसी प्रथा को पुनः आरंभ किया और नाम दिया 'शर्तबंदी' या 'गिरमिटिया प्रथा' जो कि एक भारतीय हृदय के शब्दों में गुलामी ही थीः

है गुलाम व्यापार यह कुली प्रथा के वेश में।
जो अब तक देखा न था देखा भारत देश में।।

इस प्रथा के अंतर्गत सीधे साधे भारतवासियों को सुनहरे भविष्य का लालच देकर अफ्रीका, कैरेबियाई, दक्षिण-पूर्व-एशिया एवं पूर्व फ्रांसीसी उपनिवेशों में लेजाकर बेचा गया, जहां उनका जीवन अनेक यातनाओं से सना रहा।

उपनिवेशों में रहते हुए गिरमिटिया भारतवंशियों ने अपने परिश्रम से वहां का कायाकल्प कर दिया और सतत संघर्षों द्वारा इन देशों की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रगति में भी अपना बहुमूल्य योगदान दिया। गिरमिटिया देशों में रहते हुए भारतवंशियों ने स्थानीय लोगों एवं उनकी संस्कृति से तो अपने आप को सफलतापूर्वक जोड़ा ही, साथ ही भारत से अत्यधिक दूर रहते हुए भी अपनी भाषा, संस्कृति, परंपराओं एवं विरासत को संभालकर रखा। स्वतंत्रता के बाद विदेशों में गये भारतवंशियों ने भी भारतीय संस्कृति के प्रसार में अपना अमूल्य योगदान दिया है और आज भी दे रहे हैं।

पुस्तक भारती जर्नल का यह अंक उन्हीं प्रवासी भारतवंशियों को समर्पित है और आशा है कि आप सभीं को यह आवृत्ति पसंद आयेगी।

As announced in the second issue of our e-Journal, we are proudly presenting thus special **Pravasi**

(Diaspora) issue with great honor and excitement. 150th Birth Centenary of Mahatma Gandhi is celebrated this year not only in India but in many countries of the world, with great joy. Keeping this landmark event in mind and remembering the 100th anniversary of the "**Girmitiya (Bonded Labour) System,**" this issue was planed and announced by Pustak Bharati on June 22, 2019. This issue is thus focused on all people of Indian origin, settled outside India.

When slavery was abolished in the world in 1883, the clever English helped themselves with the smart but cunning idea in the form of Bonded Labour and called it **Shartbandi or Girmitita System.** It was nothing less than slavery, but made it look like a voluntary service, by signing an agreement to that effect from the innocent and illiterate poor people.

By such deceit, the needy and unsuspecting people from India who were shown a mirage of a golden future, were transported to Africa, Caribbean, South-East-Asia and were even sold to French investors. But on reaching their destinations, they saw a pure hell of agonizing misery and hard labour.

Living in subhuman conditions, these faithful and unwavering Indians slowly adapted to the existing conditions and made valuable contribution to those countries in the political, economies, social development of their respective lands without loosing their Indian identity, culture, language, traditions and faith.

We hope this Pravasi issue dedicated to the people of Indian origin settled abroad, will enlighten and touch the hearts of the readers.

Thank you all.

Editor

Pustak Bharati

POETRY & MUSIC

काव्य-गीत-संगीत कुंज

सरस्वती वंदना

(रत्नाकर नराले)

सरस्वतीपूजनम् ।

श्लोक छंद

ग-गग-गगरे-म-ग- प-पप-पमग-पम- ।

रेरे-रे प-म-ग- रेसा- रे-गम- पमग-रेसा- ।।

(आसनम्)

स्वर्णरत्नसमायुक्तं केकिपक्षविभूषितम् ।

गृहाण शारदे मातः सुन्दरं कमलासनम् ।।

ॐ सरस्वत्यै नम आसनार्थे कुशदर्भं समर्पयामि ।

◎ Sarasvatī worship: *O Mother Shāradā! please be seated on the throne of lotus. Your throne is adorned with gold, jewels and peacock feathers.*

(पाद्यम्)

वीणावादिनि गिर्देवि स्वरदायिनि ज्ञानदे ।

गृह्लीतात्त्वं मया दत्तं पाद्य गङ्गाजलं शुभम् ।।

ॐ सरस्वत्यै नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि ते ।

◎ *O Vīnāvdnī (Player of Vīnā)! O Goddess of Speech! please accept the offering of the holy water from the river Ganges.*

(अर्घ्यम्)

विद्यादायिनि वागीशे गिरे गणपतिप्रिये ।

शब्दरूपेण त्वं देवि धनं भाग्यञ्च देहि माम् ।।

ॐ सरस्वत्यै नमोऽर्घं समर्पयामि ते ।

◎ *O Goddess of Learning! O Beloved of Ganesh! please give me the wealth of vocabulary and good luck.*

(आचमनम्)

सुरभीदुग्धयुक्तञ्च गङ्गानीरञ्च निर्मलम् ।
भाग्यदे तीर्थपानीयं स्वीकुरु देवि भारति ।।
ॐ सरस्वत्यै नम आचमनीयं नीरं समर्पयामि ।

◎ *O Mother Bhāratī (Goddess of speech)! O Giver of good fortune! please accept the offering of cow milk and water of Ganges.*

(स्नानम्)

ब्रह्मपुत्रि कलादेवि विद्ये गृहाण वाङ्मयि ।
तोयमेतद्धि स्नानार्थम्-अमृतं जाह्नवीजलम् ।।
ॐ सरस्वत्यै नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि ।

◎ *O Goddess of the Arts! O Vidyā (Goddess of Education)! O Daughter of Brahmā! please accept the offering of the holy water from Ganges for your bath.*

(वस्त्रम्)

ददे गिरे नवं वस्त्रं शोभनं बहुसुन्दरम् ।
आच्छादनं मया दत्तं स्वीकुरु प्रियदर्शिनि ।।
ॐ सरस्वत्यै नमो वस्त्राभरणं समर्पयामि ।

◎ *O Goddess of Language! O Priyadarshinī (lovely faced)! please accept the offering of the beautiful new garment.*

(चन्दनम्)

सर्वसुरप्रिये वाचे गृह्णीताद्देवि चन्दनम् ।
कस्तूरीं कुङ्कुमं रक्तं केशरञ्च सुगन्धितम् ।।
ॐ सरस्वत्यै नमश्चन्दनं समर्पयामि ।

◎ *O Goddess of Poetry! O Beloved of all Gods! please accept the aromatic offering of red sandalwood paste and saffron.*

(अक्षतम्)

गृहाण वाणि वाग्देवि शुचिं तण्डुलमक्षतम् ।
स्वरदे ज्ञानदे देवि प्रसीद भुवनेश्वरि ।।
ॐ सरस्वत्यै नमोऽक्षतं समर्पयामि ।

◎ *O Goddess of speech! O Giver of wisdom! O Giver of music! please accept the offering of pure whole rice, O Goddess of the Universe!*

(पुष्पम्)

पद्मपुष्पं जपापुष्पं कर्णिकारञ्च पाटलम् ।
चम्पकं बकुलं कुन्दं स्वीकुरु देवि मालतीम् ।।
ॐ सरस्वत्यै नमः पुष्पमालां समर्पयामि ।

◎ *O Goddess Sarasvatī! please accept the offering of the flowers of Lotus, Rose, Jasmine, Hibiscus and Marigold.*

(धूपम्)

सुगन्धितं प्रयच्छामि गोघृतेन समन्वितम् ।
धूपवर्त्तिञ्च कर्पूरं गृह्णीतान्मङ्गलं गिरे! ।।
ॐ सरस्वत्यै नमो धूपमाघ्रापयामि ।

◎ *O Goddess of Poetry! please accept the offerings of aromatic incense, camphor, clarified butter and cow milk.*

(दीपः)

वाचे विद्ये जगन्माते जगदानन्ददायिनि ।
गृह्णीष्व पावनं दीपं-ऋद्धिसिद्धी च कारिणि ।।
ॐ सरस्वत्यै नमो दीपं सन्दर्शयामि ।

◎ *O Goddess of speech! O Joy giver! O Mother of the World! O Giver of the Prosperity and success! I am lighting the lamp in front of you.*

(नैद्यवेम्)

नैवेद्यं पञ्चपक्वान्नं निवेदयामि श्रद्धया ।
रसयुक्तञ्च प्रत्यग्रं स्वायंभूव्यै सुधारसम् ।।
ॐ सरस्वत्यै नमो नैवेद्यं निवेदयामि ।

◎ *O Goddess Shāradā! O Svayambhuvī (Daughter of Manu Svāyambhu)! I am offering you five juicy foods, with all my faith and devotion.*

(आरात्रिकम्)

इडे भारति श्रीविद्ये हंसगामिनि पाहि माम् ।
स्वररूपेण त्वं देवि सङ्गीतं ननु देहि मे ।।
ॐ सरस्वत्यै नम आरत्रिकं समर्पयामि ।

◎ *O Goddess Idā (Daughter of Manu)! O Bhāratī (Goddess of speech)! O Haňsagāminī (Rider on swan)! O Shrī Vidyā (Goddess of education)! please protect me and give me sweet tunes of music.*

(पुष्पाञ्जलिः)

पिङ्गलां मङ्गलां मायां ब्रह्मणिं कमलासनाम् ।
कादम्बरीं कलां प्रज्ञां वन्देऽहं वरदायिनीम् ।।
ॐ सरस्वत्यै नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

◎ *O Goddess Kādambarī! O Pingalā! O Mangalā! O Kamalā! O Brahmānī! O Kalā! O Prajñā! I pray and salute you, O Giver of the boons!*

नीलू गुप्ता, कैलिफ़ोर्निया

प्रवासी भारतीय अन्तरात्मा की आवाज़

प्राण में मेरे समायी मेरे भारत की ज़ुदाई
छोड़ अपना देश दूर मैं परदेस में आई
मिट्टी की सोंधी महक अपने संग ले आई
न तू मुझको भूला न मैं तुझको भूल पाई

मेरे दिल की हर धड़कन में
बसा है तू मेरी साँस साँस में
आँखें खोलूँ या बन्द करूँ
तेरी ही छवि देती दिखलाई

याद आती है मुझको तेरी ज़ुदाई
हँसता खेलता बचपन बीता तेरी गोदी
सखी सहेलियों की चुहलबाजियाँ
जवानी की ओर बढ़ते क़दम अठखेलियाँ

लुकाछिपी, आँख मिचौनी देर तक ढूंढते रहना
न मिलने पर खीजना और फिर लड़ना झगड़ना
दूसरे ही क्षण सब भूल एक दूसरे के गले लगना
याद आते हैं वो मखमली दिन और जीवन सुहाना

कभी जननी कभी जन्मभूमि
कभी वसुधैवकुटुम्बकम्
पन्ने पलट पलट सुखानुभूति का अहसास
सर्वे भवन्तु सुखिन: मन को देता आह्लाद

प्राण में मेरे समायी मेरे भारत की ज़ुदाई

छोड़ अपना देस दूर मैं परदेस में आई
मिट्टी की सोंधी महक अपने संग ले आई
न तू मुझको भूला न मैं तुझको भूल पाई

कल्पना लालजी

गाथा शिवसागर रामगुलाम की

आज सुनाऊँ मैं गाथा शिवसागर रामगुलाम की,
स्वप्न स्वतंत्रता का था देखा प्रतिज्ञा यही दिन रात की।

हर एक बालक के लब पर आया नाम रामगुलाम का,

बन कर उसने सबका चाचा था कदम बढ़ाया प्रेम का।

इस दुनिया के नक्शे पर अब मोरिशस को सजा दिया,
स्वर्णाक्षरों से लिखकर उसने क्या था क्या बना दिया।

सोचा है उसके जीवन का हर एक पन्ना खोलूँ आज,
आत्मविश्वास के बल पर पलटा कैसे अंग्रेजी राज।

पूर्वज रामगुलाम के यहां सारन जिले से आये थे,
धर्म संस्कृति व भोजपुरी बस यही धरोहर लाये थे।

बनकर शर्तबंद मजदूर वे सारे थे अब जुटे वहाँ,
माटी भारतवर्ष की अब किस्मत में उनकी थी कहाँ।

शिक्षा अपनी कर के पूरी आगे दूजा कदम बढ़ाया,
आप्रवासियों का उसने झंडा ऊँचा कर के दिखलाया।

बनवास चौदह वर्ष का तब भोगा था ज्यों राम ने,
काटे लंदन में चौदह वर्ष शिवसागर रामगुलाम ने।

डाक्टरी के साथ साथ राजनीति में भी अब जम गए,
स्वप्न उनके साकार हों विचार जैसे सारे थम गये।

तन मन धन अर्पण किया तब जनसेवा व्रत के नाम,
त्यागा सांसारिक सुखों को और त्याग दिया आराम।

चिकित्सक तो वे रोगों के थे विशेषज्ञ वे प्रेम के,

दाता थे शिक्षा दीक्षा के चिंतक कुशल क्षेम के,

एडवांस पत्र के द्वारा शिवसागर ने थी जोत जलाई,
पुकार जन जीवन की तब थी जनता तक पहुंचाई ।

मानव धर्म के नाते से संकल्प ले लिया तब सबने,
सामाजिक हित का प्रण भी तब ले लिया शिवसागर ने ।

उदारता से बातें करते मिलनसार वे व्यक्ति थे,
मित्र इर्द गिर्द के सदा देते उनको शक्ति थे ।

थम्ब मार्क टू के नाम से और अंगूठा छाप उपनाम,
लेख लिखे जब चाचा ने तब सफल हुए सब काम ।

सन उन्नीस सौ चालीस से प्रतिनिधित्व करने लगे,
साधारण जनता के दुख दर्द सभी वे हरने लगे।

स्वीकारा हर चुनौती को और आगे कदम बढ़ाया,
चौरंगा स्वतंत्रता का उनको नज़र निकट तब आया ।

बारह मार्च सन अड़सठ तब नई सुबह लेकर आया,
हर्ष और उल्हास का था अब वातावरण सर्वत्र छाया ।

स्वतंत्र शीतल हवा बही तब देश मे पहली बार,
बागों में कलियाँ चटकीं महक उठा पूरा गुलज़ार ।

स्वतंत्रता पश्यात तब आया सबसे मुश्किल काम,
उन्नति का मार्ग कठिन था अब उनको कैसा आराम ।

हिन्द महासागर में शोभित तारा यह संसार का,
शिवसागर ने इस टापू पर काम किया अवतार का ।

आप्रवासियों ने आकर जब चट्टानों उन को काटा,
मेहनत की इस रोटी को तक को आपस मे था बांटा ।

दादा और पड़दादा का उनके स्वप्न हुआ तब पूरा,
तपस्वी तो वे खेतों के थे छोड़ें न कोई काम अधूरा ।

बहा पसीना खेतों में फिर ईख की फसलें लहराईं,
सारे जग ने था देखा कैसे मेहनत उनकी रंग लाई ।

सोना पत्थर के नीचे है सुनकर ही सारे आये थे,
सच्चा सोना मेहनत का पाकर उनके मन हर्षाये थे ।

एक दिन वह क्षण भी आया क्रूर काल जो कहलाया,
आँखों मे जन जन की जो खून के आँसू भर लाया ।

छीन ले गया हमसे वो जो चाचा था हम सबका प्यारा,
धरती का अनमोल रतन था हिंदमहासागर का तारा ।

भूल सके जो इस मानव को हृदय कहाँ से लायें ऐसा,

भाई,-बंधु बच्चों का चाचा कहाँ पिता था उस जैसा ।

मातृभूमि पर मिटने वाला दुख दरिद्र से लड़ने वाला,
राष्ट्रपिता इस धरती पर नहीं जन्म फिर लेने वाला ।

इस हिंदमहासागर में जब तक लहरें हैं आती जातीं,
पम्पलेमूस की बगिया में कली-कली है मुस्काती ।

याद तुझे करके चाचा ये ईख की बालें झूमेंगी,
चंचल लहरे सागर की इस तट की धरती चूमेंगी ।

पदचिन्हों की तेरी छाया बसी धरती और आकाश में,

जीवित सदा रहेगा तू इस देश के इतिहास में ।

डॉ. राकेश कुमार दूबे

प्रवासियों को भारत माता का संदेश

राष्ट्रीय पथिक

कहीं रहो भारत का रहना भूल न जाना अपना देश ।
कुछ भी करना छोड़ न देना प्रिय पुत्रों! निज भाषा वेश ।।

मैं परवश थी, इस लिए तुम दर-दर धक्के खाते थे ।
अपने से नीचों के सम्मुख उन्नत भाल झुकाते थे ।।
पर वे दिन अब बीत गए मैं भी स्वतंत्र सुख पाऊंगी ।
तीस कोटि संतानों की सच्ची माता कहलाऊँगी ।।
अब तुम अपने सहोदरों से शक्ति सहारा पाओगे ।
फिर अपने बल से सूखे उपवन को हरा बनाओगे ।।
हिंदी और हिंद अब जग में पावेंगे समुचित सम्मान ।
देखेगा संसार बनेगा पुनः जगत गुरु हिंदुस्तान ।।
अधिक कहूँ क्या दूर देश में मान बचाते रहना तात ।
मर जाना अपमान न सहना करे शत्रु कितना ही घात ।।

प्रवासी, वर्ष-1, अंक-2, दिसंबर, 1947, पृष्ठ 19
प्रस्तुतकर्ताः डॉ. राकेश कुमार दूबे